इकाई–4. तुलनात्मक लोक प्रशासन एवं विकास प्रशासन

अध्याय–9
तुलनात्मक लोक प्रशासन
(Comparative Public Administration)

तुलना करना मानवीय स्वभाव हैं। मानव सभ्यता के आरम्भ से ही तुलना का प्रचलन रहा हैं । लोक प्रशासन में तुलनात्मक ढंग से अध्ययन ही तुलनात्मक लोक प्रशासन है। यह लोक प्रशासन के अध्ययन क्षेत्र में अपेक्षाकृत एक नवीन अवधारणा है, यद्यपि इसे पूर्णतः नवीन नहीं कहा जा सकता। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् सामाजिक विज्ञानों को नए ढंग से सोचने एवं समझने हेतु मजबूर होना पड़ा । चूँकि यह युद्ध अपने साथ विभिन्न प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक, भौगोलिक इत्यादि परिवर्तन साथ लाया। अतः युद्धोत्तर उद्भव का प्रथम मुख्य विकास तुलनात्मक लोक प्रशासन है। इसका लक्ष्य लोक प्रशासन में विचारधारा को मजबूत बनाते हुए एक अधिक वैज्ञानिक प्रकृति के लोक प्रशासन का विकास करना है। राबर्ट डहल ने कहा कि '' जब तक लोक प्रशासन का अध्ययन तुलनात्मक नहीं होता है तब तक इसके विज्ञान होने का दावा खोखला है।'' अतः लोक प्रशासन के अध्ययन में तुलनात्मक अध्ययन पर बल दिया जाना आरम्भ हुआ।

तुलनात्मक लोक प्रशासन के उदय के कारण :

तुलनात्मक लोक प्रशासन का आरम्भ अग्रलिखित कारणों से हुआ :

1. परम्परागत दृष्टिकोण की अपर्याप्तता :

लोक प्रशासन समय के साथ बदल रही परिस्थितियों से सहज ढंग से आत्मसात् नहीं कर पा रहा था। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद आज की तरह वैश्विक स्तर पर तेजी से परिवर्तन आ रहे था जिनका प्रत्यक्ष – अप्रत्यक्ष प्रभाव निजी रूप से प्रत्येक देश पर पड़ रहा था। पारम्परिक लोक प्रशासन के अध्ययन हेतु समुचित उपागम का अभाव था अतः इनके अध्ययन तथा प्रभावी आकलन हेतु तुलनात्मक लोक प्रशासन का उदय हुआ । सरल शब्दों में कहे तो उस समय विद्यार्थी केवल एक देश के प्रशासन की जानकारी प्राप्त कर सकता था। किन्तु दूसरे देशों से उसकी समानता या अन्तर देखने में असमर्थ था।

2. शोध हेतु नवीन साधनों की शुरूआत :

लोक प्रशासन को विज्ञान के समान दर्जा दिलवाने हेतु इसके संकुचित एवं सीमित आवरण से बाहर निकालकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करने हेतु प्रयास किए गए। इस हेतु तुलनात्मक अध्ययनों की शुरूआत की गई।

3. अन्तर्राष्ट्रीय निर्भरता :

विभिन्न देशों एवं क्षेत्रों के मध्य बढते सम्पर्क ने इसमें योगदान दिया। आज कोई भी देश प्रत्येक क्षेत्र में पूर्णतः आत्मनिर्भर नहीं हो सकता अतः अन्य देशों से आयात–निर्यात एवं मेलजोल बढ़ा जिससे स्वतः अन्य देशों के प्रशासनिक अभिकरणों की तुलना स्वयं के देश के अभिकरणों से होनी आरम्भ हुई।

4. विश्व युद्ध :

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिकन विद्वान तथा प्रशासक कई देशों में गए। जिससे उन देशों की प्रशासनिक व्यवस्थाओं की विशेषताओं के सम्बन्ध में विभिन्न जानकारियाँ प्राप्त हुई।

5. नव स्वतन्त्र राष्ट्रों का उदय :

बीसवीं शताब्दी के मध्य में भारत सहित अनेक अफ्रीकी एवं एशियाई देश विदेशी दासता से मुक्त होकर स्वतंत्र हुए। इन नव स्वतंत्र तथा पिछड़े देशों को तृतीय विश्व (Third World) नाम दिया गया। यहाँ तीव्र सामाजिक–आर्थिक विकास की गुंजाइश थी। इन देशों में विकास हेतु प्रशासनिक तंत्र का कौनसा प्रतिमान अधिक संगत हो इसकी जानकारी हेतु विद्वानों द्वारा अनेक शोध किए गए। इसी सन्दर्भ में अमेरिकी विदेशी सहायता कार्यक्रमों ने भी तुलनात्मक लोक प्रशासन के उत्थान में योगदान दिया। 1952 में प्रिन्सटन (अमेरिका) में आयोजित ''तुलनात्मक प्रशासन सम्मेलन'' द्वारा भी तुलनात्मक दृष्टिकोण का विकास प्रारम्भ हुआ।

तुलनात्मक लोक प्रशासन का अर्थ :

तुलनात्मक लोक प्रशासन से अभिप्राय ऐसे विषय से है जिसके अन्तर्गत दो या दो से ज्यादा देशों की प्रशासनिक इकाईयों की संरचना तथा इन संरचनाओं के कार्यों की परस्पर तुलना की जाती है। यह तुलना राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, अन्तर सांस्कृतिक तथा सामयिक (समय) हो सकती है । राष्ट्रीय में एक ही राष्ट्र के विभिन्न राज्यों की या अलग – अलग विभागों की प्रशासनिक इकाइयों की तुलना की जा सकती है। अन्तर्राष्ट्रीय में दों विभिन्न देशों की प्रशासनिक संरचनाओं की तुलना की जाती है जैसे भारत तथा अमेरिका के अधिकारी तंत्र की तुलना या राष्ट्रपति चुनाव की प्रणाली की तुलना आदि। अन्तर सांस्कृतिक में दो विभिन्न संस्कृतियों की प्रशासनिक व्यवस्थाओं की तुलना की जाती है, जैसे पूंजीवादी संस्कृति तथा समाजवादी या साम्यवादी संस्कृति या अन्य संस्कृतियों के विभिन्न पहलुओं का तुलना अध्ययन। सामयिक में विभिन्न समय विन्यास के दृष्टिकोण से तुलना की जाती है जैसे मौर्य काल एवं गुप्त काल की न्यायिक प्रणाली की तुलना। तुलना के विभिन्न स्वरूप स्पष्ट करते है कि आधुनिक तुलानात्मक लोक प्रशासन का कार्य क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत हो गया है।

परिभाषाएँ :

1. निमरोद रफैली : '' तुलनात्मक लोक प्रशासन, तुलनात्मक आधार पर लोक प्रशासन का अध्ययन है।''
2. तुलनात्मक प्रशासन समूह : '' विभिन्न संस्कृतियों तथा राष्ट्रीय परिदृश्य में प्रयुक्त हुए लोक प्रशासन के सिद्वांत तथा तथ्यात्मक सामग्री जिसके द्वारा इसका विस्तार एवं परीक्षण किया जा सकता है।''
3. फैरल हैडी : ''तुलनात्मक लोक प्रशासन सिद्वान्त निर्माण की प्रक्रिया के समान है।''
4. फ्रेड रिग्ज़ : ''तुलनात्मक अध्ययन वह है जो अनुभव सम्बन्धी, नोमोथैटिक (सामान्य परक) तथा पारिस्थितिकीय हो''।
5. टी. एन. चतुर्वेदी : ''तुलनात्मक लोक प्रशासन के अन्तर्गत विभिन्न संस्कृतियों में कार्यरत विभिन्न राज्यों की सार्वजनिक एवं प्रशासनिक संस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है।''

व्यवहार में तुलनात्मक लोकप्रशासन ज्ञान की नई शाखा है जो दो या अधिक प्रशासनिक संगठनों, देशों तथा विभिन्न व्यवस्थाओं के मध्य तुलनात्मक अध्ययन करती है। इसमें विभिन्न प्रशासनिक अभिकरण, विभाग तथा निगम प्रक्रिया आदि होते हैं। यह सामान्यीकरण तथा वैज्ञानिक विधि पर बल देती है। यह अन्तर्विषयक दृष्टिकोण जो एक विषय का दूसरे विषय के साथ में मेल – जोल वाले सम्बन्ध पर बल देती है।

तुलनात्मक लोक प्रशासन का उद्देश्य :

तुलनात्मक लोक प्रशासन के अनेक प्रयोजन है, यही कारण है कि आज विश्व के प्रायः सभी देशों में तुलनात्मक लोक प्रशासन के महत्व को स्वीकार कर लिया गया है। इसके उद्देश्य अग्रलिखित है–

1. विशिष्ट प्रशासनिक समस्याओं, प्रणालियों इत्यादि का अध्ययन करके सामान्य नियमों तथा सिद्धान्तों का सृजन करना।
2. प्रशासनिक व्यवहार में विभिन्न संस्कृतियों, राष्ट्रों एवं व्यवस्थाओं का विश्लेषण तथा व्याख्या करना।
3. विविध देशों की प्रशासनिक प्रणालियों की तुलनात्मक परिस्थिति को पहचान कर उनकी सफलता एवं असफलता के कारणों की जाँच–पड़ताल करना।
4. प्रशासनिक सुधारों की कार्य–नीति को समझना।
5. लोक प्रशासन के अध्ययन के क्षितिज को व्यापक, व्यावहारिक तथा वैज्ञानिक बनाना।

व्यवहार में लोक प्रशासन को समृद्ध, व्यापक तथा वैज्ञानिक बनाना ही तुलनात्मक लोक प्रशासन का उद्देश्य है।

तुलनात्मक लोक प्रशासन की प्रकृति : (Nature of Comparative Public Administration)

तुलनात्मक लोक प्रशासन नैसर्गिक रूप से ही वैज्ञानिक एवं तर्कसम्मत है। फैरल हैडी ने इसकी प्रकृति को चार प्रकार में विभक्त किया है :

1. सुधरी हुई पारस्परिक प्रकृति
2. विकासमान प्रकृति
3. सामान्य प्रणाली का प्रारूप
4. मध्यवर्ती सिद्धान्तों का प्रारूप

1. सुधरी हुई पारस्परिक प्रकृति :

तुलनात्मक लोक प्रशासन विविध प्रशासनिक संस्थाओं तथा संगठनों के मध्य परस्पर तुलना करता है तथा इनका विश्लेषण कर निष्कर्ष प्राप्त करता है।

2. विकासमान प्रकृति :

तुलनात्मक लोक प्रशासन सामाजिक – आर्थिक विकास को महत्व देता है अतः यह उन आकड़ों एवं तथ्यों पर बल देता है जिनकी सहायता से विकास सम्भव हैं।

3. सामान्य प्रणाली का प्रारूप :

इससे अभिप्राय है कि सामाजिक परिवेश के अनुरूप ही प्रशासनिक तंत्र संचालित होता है, अतः एक ऐसा प्रतिमान (मॉडल) बनाया जाता है जो सामान्य रूप से समाज व प्रशासन दोनों पर लागू किया जा सकें।

4. मध्यवर्ती सिद्वान्तों का प्रारूप :

इससे अभिप्राय उन सि़द्वान्तों के पालन से है जो सभी पक्षों पर व्यावहारिक रूप से लागू किए जा सकते है, तथा जिनका तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक परीक्षण किया जा सकें।

राबर्ट टी. गोलम्बस्की का मानना है कि तुलनात्मक लोक प्रशासन ध्यान केन्द्रित करने योग्य मुद्दों पर बल देता है यह परिणाम एवं निर्धारित अध्ययन पद्धति (उपागम) अपनाने हेतु अभिप्रेरणा प्रदान करता है। तुलनात्मक लोक प्रशासन की प्रकृति को समझाने में सर्वाधिक योगदान फ्रेड रिग्ज़ का हैं।

रिग्ज़ ने 1962 में तुलनात्मक लोक प्रशासन की अग्रलिखित तीन प्रवृत्तियाँ बतलाई है :

1. आदर्शात्मक से अनुभवमूलक उन्मुखता (Normative to Emperical):

यह ''क्या होना चाहिए'' के स्थान पर ''क्या है'' पर अधिक ध्यान केन्द्रित करता है। अर्थात् मात्र सैद्वान्तिक नियमों की व्याख्या करने या केवल आदर्शों की चर्चा करने के स्थान पर उन परिस्थितियों को अधिक महत्व दिया जाए जो वास्तव में हमारे समक्ष है। व्यवहार में तुलनात्मक लोक प्रशासन की प्रकृति आदर्शमूलक (Normative) की जगह अनुभवमूलक (Emperical) ज्यादा है।

2. गैर पारिस्थितिकीय से पारिस्थितिकीय (Non Ecological to Ecological) :

अर्थात् पर्यावरण उन्मुख घटकों पर जोर दिया जाना चाहिए। लोक प्रशासन को प्रभावित करने वाले सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक, एतिहासिक तथा भौगौलिक पर्यावरण का गहनता से अध्ययन किया जाना चाहिए। लोक प्रशासन के पूर्ववर्ती अध्ययन मूलतः गैर पारिस्थिकीय **(Non Ecological)** होते थे फलतः उनमें स्थानीय पर्यावरण का उल्लेख बेहद सीमित होता था , जबकि वास्तविकता यह है कि किसी भी देश का प्रशासन अपने आस–पास के समाज,

संसाधनों, सामाजिक –मूल्यों, राजनीतिक दशाओं , आर्थिक आदि। अनुभवमूलक **(Ecological)** घटकों से अत्यधिक प्रभावित होता है।

3. विशिष्टता से सामान्यपरकता : (Ideographic to Nomothatic)

रिग्ज़ के अनुसार विशिष्टता **(Ideographic)** अर्थात् किसी एकल संगठन, व्यक्ति या समाज के अध्ययन के स्थान पर तुलनात्मक लोक प्रशासन की प्रकृति सामान्यपरक या अधिक व्यापकता लिए हुए है। सामान्यपरक **(Nomothatic)** से अभिप्राय ऐसे घटकों से है जो सभी में पाये जाते है। विशिष्टता की जगह सामान्यपरकता का समावेश तभी संभव है। जबकि तुलनात्मक अध्ययनों पर ज्यादा बल दिया जाए क्योंकि सामान्य घटकों की जानकारी तुलनात्मक अध्ययनों से ही संभव है।

व्यवहार में तुलनात्मक लोक प्रशासन की प्रकृति में वैज्ञानिकता, सामान्यपरकता, वस्तुनिष्ठता के साथ परिणाम एवं अनुभव मूलकता के घटक निहित है।

तुलनात्मक लोक प्रशासन का क्षेत्र : (Scope of Comperative Public Administration)

क्षेत्र से अभिप्राय विस्तार से है किसी भी विषय के सम्बन्ध में क्षेत्र का अर्थ है कि उस विषय के अध्ययन में क्या – क्या घटक शामिल है। तुलनात्मक लोक प्रशासन अपने जन्म के साथ ही वैश्वीकृत है, क्योंकि इसके अध्ययन का क्षेत्र विश्व के समस्त देशों की प्रशासनिक व्यवस्थाएँ मानी जाती है। यद्यपि किसी भी देश के आन्तरिक प्रशासनिक संगठनों का अन्तर्देशीय (Intra Country) अध्ययन भी हो सकता है साथ ही विभिन्न देशों के मध्य अन्तर्राष्ट्रीय (Inter-National) अध्ययन अग्रलिखित तीन स्तरों पर किया जाता है।

1. वृहद्स्तरीय अध्ययन (Macro Level Study) :

इसके तहत किसी एक देश की सम्पूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन किसी दूसरे देश की सम्पूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था के साथ किया जाता है। उदाहरण के लिए भारत की प्रशासनिक व्यवस्था का तुलनात्मक अध्ययन अमेरिका, फ्रांस आदि की प्रशासनिक व्यवस्था से किया जाता है। इस अध्ययन में दोनों देशों के आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक , राजनीतिक पर्यावरण का अध्ययन किया जाता हैं।

2. मध्यवर्ती अध्ययन (Meso Level Study) :

इस अध्ययन में दो देशों की प्रशासनिक व्यवस्था के किसी एक बड़े अंग का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है, जैसे भारत तथा अमेरिका की वित्तीय प्रणाली या स्थानीय प्रशासन का अध्ययन। इस अध्ययन का क्षेत्र किसी देश की सम्पूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था नहीं होती तथा न ही इसमें इन व्यवस्थाओं के किसी सूक्ष्म अंग की तुलना की जाती है । लेकिन इन दोनों के प्रशासन के एक बड़े भाग की तुलना दूसरे देश की समस्तरीय प्रशासनिक व्यवस्था से की जाती है।

3. लघुस्तरीय अध्ययन (Micro Level Study) :

इसमें छोटे या सूक्ष्म दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है। आजकल सामाजिक विज्ञानों में लघुस्तरीय अध्ययन अधिक प्रचलित है। इसमें तुलनात्मक अध्ययन का क्षेत्र सीमित होता है। इसमें एक विशेष प्रक्रिया का अध्ययन दूसरे देश की समकक्ष प्रशासनिक व्यवस्था से किया जाता है जैसे भारत तथा अमेरिका में सोश्यल मीडिया (Social Media) का प्रशासन पर प्रभाव, भारत में नवम्बर 2016 में हुए विमुद्रीकरण से उपजे हालातों पर प्रबन्धन के सम्बन्ध में भारतीय रिजर्व बैंक एवं अन्य देश जहाँ विमुद्रीकरण (नोटबंदी) हुआ हो वहाँ के केन्द्रीय बैंक के प्रबन्धन का तुलनात्मक अध्ययन अथवा भारत एवं स्वीडन में भ्रष्टाचार से निपटने हेतु लागू किए गए सरकारी प्रयासों का तुलनात्मक अध्ययन। आजकल इस प्रकार के अध्ययन अत्यधिक प्रचलित है।

उपर्युक्त के साथ तुलनात्मक लोक प्रशासन के क्षेत्र में अन्तर्देशीय (देश के भीतर) , अन्तरसांस्कृतिक (दो देशों के प्रशासकों के कार्य व्यवहार , रीति रिवाज आदि का अध्ययन) , समसामयिक (वर्तमान भारत तथा जर्मनी की तुलना), संकर सामयिक (वर्तमान प्रशासन की प्राचीन काल के प्रशासन से तुलना) विकसित, विकासशील एवं अत्यन्त पिछड़े देशों के मध्य तुलना इत्यादि भी शामिल है।

तुलनात्मक लोक प्रशासन का महत्व (Importance of Comperative Public Administration) :

तुलनात्मक लोक प्रशासन के माध्यम से लोक प्रशासन का सशक्तीकरण हुआ है। विषय के रूप में इससे लोक प्रशासन का विस्तार तथा अनेक नए सम्प्रत्य लोक प्रशासन के पाठ्यक्रम में शामिल हुए। व्यवहारिक प्रशासन की दृष्टि से जब दो या

अधिक देशों की प्रशासनिक व्यवस्थाओं की परस्पर तुलना की गई तो प्रशासन में सुधार हेतु स्वतः नई दिशा मिलनी आरम्भ हुई। इसी आधार पर भारत ने भ्रष्टाचार तथा कुप्रशासन को रोकने हेतु स्वीडन में स्थापित ओम्बुडसमैन प्रणाली को लोकपाल के रूप में भारत में लागू करने हेतु प्रयास आरम्भ किए। तुलनात्मक लोक प्रशासन के माध्यम से ही विभिन्न समाजों की व्यवस्थित तुलना करके उनकी समरूपता एवं विलक्षणताओं को स्पष्ट किया जा सकता है, अतः इसका अत्यधिक महत्व है, इसके महत्व को अग्रलिखित बिंदुओं की सहायता से समझ सकते है :

1. तुलनात्मक लोक प्रशासन के अध्ययन से लोक प्रशासन के विषय हेतु अनेक सिद्धान्तों का निर्माण हुआ है।
2. इससे लोक प्रशासन की अध्ययन पद्धति में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का प्रसार हुआ है।
3. इससे सामाजिक दृष्टि से अनुसंधान का क्षेत्र व्यापक तथा गहन हुआ है, जो पहले सीमित था।
4. तुलनात्मक अध्ययनों से विभिन देशों का प्रशासनिक व्यवस्थाओं के मध्य तुलना एवं विश्लेषण बढ़ा हैं। इससे विभिन्न देश एक–दूसरे के अनुभव से लाभ प्राप्त कर रहे है। एक देश की व्यवस्था को आवश्यकतानुसार संशोधित करके दूसरे देश में

लागू किया जा रहा है। इससे सुशासन (Good Governance) की प्राप्ति होना सरल हुआ है।

5. इससे लोक प्रशासन के विद्यार्थियों, शोधार्थियों, अध्यापकों एवं प्रशासकों को दूसरे देशों की व्यवस्था को समझने में सहायता मिलती है।

निष्कर्ष :

तुलनात्मक लोक प्रशासन ने लोक प्रशासन को जीवन दान दिया है, क्योंकि एक समय स्वयं लोक प्रशासन अस्तित्व के संकट के दौर से गुजरा है। इस संकट काल में तुलनात्मक लोक प्रशासन ने ही लोक प्रशासन को विषय के रूप में बने रहने हेतु सहारा दिया, तथापि तुलनात्मक लोक प्रशासन की भी अनेक आलोचनाएँ की जाती है जैसे :

1. वैज्ञानिक दृष्टिकोण को व्यवहार में लागू करने हेतु तुलनात्मक लोक प्रशासन स्पष्ट विधि या तरीका नहीं बना पाया
2. इसने लक्ष्य आधारित अनुभवमूलक सिद्धान्तों का विकास नहीं किया जिससे इसका व्यावहारिक पक्ष कमजोर बना हुआ है।
3. तुलना करने के स्पष्ट आधारों का अभाव है, क्योंकि प्रत्येक देश का पर्यावरण भिन्न प्रकृति का है, अतः कोई व्यवस्था एक देश में उचित है तो अन्य में वह अनुचित हो सकती है।

इन्हीं कारणों के चलते धीरे–धीरे 1970 के दशक की शुरूआत में तुलनात्मक लोक प्रशासन पर भी संकट छा गया। लेकिन 1980 के दशक की शुरूआत में कुछ विद्धानों द्वारा इसके **पुनरोत्थान** हेतु एक आन्दोलन चलाया गया। इन विद्धानों ने इस विषय की अधोमुखी प्रवृत्ति को रोकने का प्रयास किया तथा इसमें कतिपय सुधार करके इसे एक ताजा जीवन दिया। इन विद्धानों मे फैरेल हैडी, चार्ल्स टी, गुडशेल, जुगं एस. जून, ओ. पी. द्विवेदी तथा अन्य शामिल हैं। इन प्रयासों के मुख्य–मार्गदर्शक फैरल हैडी थे। इन्होंने इस बात पर बल किया कि पुरानी कमियों का चिन्तन छोड़कर इस विषय के आकर्षक नवीन अवसरों के दोहन की आवश्यकता है। आज तुलनात्मक लोक प्रशासन का अध्ययन लोक प्रशासन के साथ सफलतापूर्वक सभी देशों में हो रहा है। तुलनात्मक लोक प्रशासन द्वारा अनेक नये उपागमों का विकास किया गया है जिससे लोक प्रशासन की विषय एवं व्यवहार के रूप में जड़ें अत्यधिक मजबूत हुई हैं।

महत्वपूर्ण बिंदु :

1. लोक प्रशासन में सन् 1952 में प्रिन्सटन (अमेरिका) मे आयोजित 'तुलनात्मक प्रशासन सम्मेलन' द्वारा तुलनात्मक दृष्टिकोण का विकास आरम्भ हुआ।
2. तुलनात्मक ढ़ंग से अध्ययन ही तुलनात्मक लोक प्रशासन है।
3. तुलनात्मक लोक प्रशासन का विकास द्वित्तीय विश्व युद्ध के बाद हुआ है।
4. परम्परागत दृष्टिकोण की अपर्याप्यता के कारण तुलनात्मक लोक प्रशासन का विकास हुआ।
5. तुलनात्मक लोक प्रशासन सिद्धान्त निर्माण की प्रक्रिया के समान हैं।
6. इसका उद्देश्य विशिष्ट प्रशासनिक समस्याओं, प्रणालियों का अध्ययन करके सामान्य नियमों एवं सिद्धान्तों का सृजन करना है।
7. तुलनात्मक लोक प्रशासन वैज्ञानिक एवं तर्क सम्मत है।
8. यह विकासमान प्रकृति का विषय है।
9. सामान्य प्रणाली प्रारूप से अभिप्रायः है कि सामाजिक परिवेश के अनुरूप ही प्रशासनिक तंत्र का संचालन होता है।
10. तुलनात्मक लोक प्रशासन में वृहद्स्तरीय, मध्यवर्ती तथा लघुस्तरीय अध्ययन किए जाते है।
11. तुलनात्मक लोक प्रशासन के पुनरूत्थान आन्दोलन के मार्गदर्शक फैरल हैडी थे।
12. तुलनात्मक लोक प्रशासन में अग्रणी भूमिका फ्रेड रिग्ज़ ने निभाई।

अभ्यासार्थ प्रश्न

बहुचयनात्मक प्रश्न :

1. तुलनात्मक लोक प्रशासन में महत्वपूर्ण भूमिका किसने निभाई ?
(अ) मेरी पार्कर फोलेट (ब) एल.डी.व्हाइट
(स) वुडरो विल्सन (द) फ्रेड रिग्ज़

2. फैरल हैडी ने तुलनात्मक लोक प्रशासन की प्रकृति को कितने भागों में विभक्त किया है ?
(अ) एक (ब) दो (स) तीन (द) चार

3. तुलनात्मक लोक प्रशासन के उदय का कारण है –
(अ) द्वितीय विश्व युद्ध (ब) अन्तर्राष्ट्रीय निर्भरता
(स) नव स्वतन्त्र (द) उपर्युक्त सभी

4. ''तुलनात्मक लोक प्रशासन, तुलनात्मक आधार पर लोक प्रशासन का अध्ययन है''। यह किसने कहा है ?
(अ) निमरोद रैफली (ब) फ्रेड रिग्ज
(स) फैरल हैडी (द) लूथर गुलिक

5. तुलनात्मक लोक प्रशासन को सिद्धान्त निर्माण की प्रक्रिया के समान किसने माना है –
(अ) साइमन (ब) चेस्टर बर्नाड
(स) फैरल हैडी (द) विलोबी

6. फ्रेड रिग्ज ने तुलनात्मक लोक प्रशासन की कितनी प्रवृत्तियाँ बतलाई है ?
(अ) एक (ब) दो (स) तीन (द) चार।

7. एक देश की सम्पूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था की किसी अन्य देश की प्रशासनिक व्यवस्था से तुलना कहलाएगी।
(अ) वृहद्स्तरीय अध्ययन (ब) मध्यवर्ती अध्ययन
(स) लघुस्तरीय अध्ययन (द) संकर सामयिक अध्ययन

8. निम्नलिखित में से कौनसी तुलनात्मक लोक प्रशासन की आलोचना है ?
(अ) स्पष्ट विधि का अभाव
(ब) अनुभव मूलक सिद्धान्तों का विकास नहीं होना।
(स) तुलना के स्पष्ट आधारों का अभाव
(द) उपर्युक्त सभी।

9. तुलनात्मक लोक प्रशासन पर संकट कब आया ?
(अ) 1950 के दशक में (ब) 1960 के दशक में।
(स) 1970 के दशक में (स) 1980 के दशक में।

10. तुलनात्मक लोक प्रशासन हेतु पुनरोत्थान आन्दोलन किसके मार्गदर्शन में चलाया गया ?
(अ) फ्रैड रिग्ज़ (ब) हेनरी फेयोल
(स) फैरल हैडी (द) विलोबी

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न :

1.तुलनात्मक लोक प्रशासन की परिभाषा बताइये।
2. इडियोग्राफिक से नोमोथेटिक का अर्थ बताइये।
3. वृहद्स्तरीय अध्ययन किसे कहते है ?
4. संकर सामयिक अध्ययन किसे कहते है ?
5. तुलनात्मक लोक प्रशासन में अग्रणी भूमिका किसकी रही हैं ?
6. तुलनात्मक लोक प्रशासन का उदय कब हुआ ?
7. तुलनात्मक लोक प्रशासन का पुनरोत्थानवादी आन्दोलन क्या हैं ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न :

1. तुलनात्मक लोक प्रशासन का अर्थ बताइये।
2. फ्रेड रिग्ज द्वारा बतलाई गई तीन प्रवृत्तियाँ समझाइये।
3. तुलनात्मक लोक प्रशासन के उदय के कारण लिखिए।
4. तुलनात्मक लोक प्रशासन में अन्तर्राष्ट्रीय निर्भरता से क्या अभिप्राय है ?
5. लघुस्तरीय अध्ययन को उदाहरण सहित समझाइये।
6. फैरल हैडी की चार प्रवृत्तियों को स्पष्ट कीजिए।
7. लघुस्तरीय अध्ययन को उदाहरण सहित समझाइये।
8. तुलनात्मक लोक प्रशासन पर आए संकट के कारण स्पष्ट कीजिए।

निबन्धात्मक प्रश्न :

1. तुलनात्मक लोक प्रशासन की अवधारणा की समझाते हुए इसकी प्रकृति बतलाइये।
2. तुलनात्मक लोक प्रशासन के क्षेत्र का वर्णन कीजिए।
3. तुलनात्मक लोक प्रशासन का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसका महत्त्व समझाइये।
4. तुलनात्मक लोक प्रशासन के उदय तथा इसका पुनरोत्थानवादी आन्दोलन पर लेख लिखिए।

उत्तर माला :

1. (द)	2. (द)	3. (द)	4. (अ)
5. (स)	6. (स)	7. (अ)	8. (द)
9. (स)	10. (स)		